International Journal of Applied Research 2019; 5(8): 37-38

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(8): 37-38
www.allresearchjournal.com
Received: 23-06-2019
Accepted: 28-07-2019

Pooran Lal Meena
Research Scholar,
Department of History,
University of Delhi, Delhi,
India

Correspondence
Pooran Lal Meena
Research Scholar,
Department of History,
University of Delhi, Delhi,
India

पुरातात्त्विक दृष्टि से बृज कला की प्राचीनता

Pooran Lal Meena

प्रस्तावना

सामान्तः यह माना जाता है कि बृज क्षेत्र भगवान कृष्ण का निवास स्थान रहा है अतः धार्मिक दृष्टि से इसकी पवित्रता स्वतः सिद्ध हो जाती है। यह क्षेत्र विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ (महाकाव्य) महाभारत में अन्य प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण स्थलों के समान महत्व का रहा है। सोलह महाजनपदों में से एक महाजनपद सूरसेन जिसकी राजधानी मथुरा थी जो कुरु जनपद की राजधानी इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान दिल्ली) जनपद का पड़ोसी था। इसी के पडोस में प्रसिद्ध मत्स्य जनपद रहा है जिसकी पुरातात्त्विक पहचान अशोक के बौद्ध धर्म से सम्बन्धित दो शिलालेखों से होती है।

जिसमें से एक प्रसिद्ध पहाड़ी बीजक पर स्थित है, इसी अशोक के शिलालेख में पहली बार अशेक स्वयं बौद्ध, धम्म, संघ में अपनी आस्था प्रकट करता है साथ ही बौद्ध धर्म को नुकसान पहुँचाने वालों को कड़ी चेतावनी भी देता है जिसमें तत्कालीन समय के लुटेरे, बहेलिये, कवाइलिए तो शामिल है ही साथ–साथ बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियाँ भी शामिल थे अर्थात् सम्राट अशोक ने दोनों को कड़ी चेतावनी दे रखी थी कि किसी ने भी आचार–विचार में संलग्न ध्यानमग्न भिक्षु–भिक्षुणियों को कोई नुकसान पहुँचाया तो उन्हें कड़ी सजा दी जायेगी।

सम्राट अशोक के इस आदेश का दोनों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा और बीजक की पहाड़ी एक प्रसिद्ध पवित्र और महान बौद्ध तीर्थ स्थल के रूप में प्रसिद्धी को प्राप्त करती गयी।

सन् 1935–36 में प्रसिद्ध ब्रिटिश कालीन पुरातत्ववेत्ता दया राम साहनी के नेतृत्व इस स्थल का उत्खनन हुआ। उस समय इस स्थल से विशाल बौद्ध मढ सामने आया जिसमें 24–26 चक्राकार खांचे बन हुए थे। प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता साहनी के अनुसार ये चक्राकार मठ बौद्ध–भिक्षु और भिक्षुणियों की एकाग्रता और पूजा–अर्चना के काम में लिये जाते थे साहनी के अनुसार–अपनी एकाग्रता को और मजबूती देने के लिए सूर्यपूजा की जाती अर्थात् सूर्य की दिशा की ओर मुख–मस्तिष्क की दिशा रखी जाती आज भारत योग दिवस मनवाने के लिए प्रसिद्ध हुआ है योग की अवधारणा इस बीजक की पहाड़ी पर मौर्य सम्राट अशोक महान के समय से इन दो स्थलों में देखी जा रही है इसके प्रमाण पुरातत्ववेत्ता दयाराम साहनी ने 1935–36 के उत्खनन से खोजे है।

इसी उत्खनन से साहनी को एक कुल्हाड़ी भी प्राप्त हुई है जो यह दर्शाती है कि बीजक पर बसे लोगों को उच्चकोटि की (आयरन) लौह तकनीक बनाने की कला थी, वाद में इसके प्रमाण दिल्ली स्थित महरौली के लौह स्तंभ में देखे जा सकते हैं।

इस कुल्हाड़ी से जो इस समय बीजक पहाड़ी के नीचे बने राज्य संग्रहालय में सुरक्षित है मौर्यों की पत्थर कला जो पूरे भारत में ही नहीं विश्व में भी प्रसिद्ध है पत्थर कला के कई नमूने आज भी देखने को मिल जाते हैं जैसे– सारनाथ, लोरिया नंदनगढ़ जिनपर उच्च कोटि की पालिस की गई है। साथ ही सिंह के सिर के स्तंभ के ऊपर दिखाया गया है।

इसी स्थल से प्रसिद्ध ब्रिटिश कालीन–पुरातत्ववेत्ता दयाराम साहनी को शुंग और कुषाण कालीन वर्तन जिनमें सुराईया जो चाक पर घुमाकर बनाई गयी है और उन पर उच्चकोटि की आकृतियाँ उकेरी गई है भी मिली है। शुंग और कुषाण तथा मौर्यों से लेकर हर्ष के समय की कलात्मकता के अवशेष, अभिलेख इस क्षेत्र को कलात्मक वैभव और वैविध्यता प्रदान करते है। आज अशोक महान का यह शिलालेख इस पहाड़ी पर स्थित नहीं है इसके आधे हिस्से को ही यहाँ देखा जा सकता है क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने इसे यहाँ से कटवाकर कलकत्ता में स्थापित कर दिया, ऐसा इसलिए किया क्योंकि इसे पढ़वाना था और क्योंकि तत्कालीन समय में यहाँ से कलकत्ता के लिए सीधे नियमित यातायात की सुविधा नहीं थी जिसके कारण विद्वान इस दुर्गम स्थल तक नियमित पहुँच नहीं बना पा रहे थे। अतः इसे कलकत्ता स्थापित कर दिया गया। आज इस अशोक कालीन महान शिलालेख का नाम कलकत्ता बैराठ–भाब्रू रखा गया है।

इसी पहाड़ी पर एक बौद्ध मंदिर भी है। जिसकी प्रसिद्धि एक ही विशाल सिला से बने मंदिर के रूप में पूरे भारत में प्रसिद्धि है।

बौद्ध मठ और बौद्ध मंदिर के साथ इस पहाड़ी से दयाराम साहनी को 36 प्रकार के सिक्के मिले जिनमें पंचमार्क सिक्के, गुप्त कालीन सिक्के प्रसिद्ध है।

बीजक पहाड़ी के नीचे स्थित राज्य पुरातात्विक संग्रहालय में हार्पून, छेनी, कुल्हाड़ी, जलपात्र, परशु, PGW, NBPW, यक्षिणी, महान मौर्य सम्राट अशोक के द्वारा इस ब्रज–मत्य क्षेत्र को अपना हिस्सा बना लेने के प्रमाण बीजक शिलालेख है जो स्वयं मौर्य सम्राट अशोक ने अंकित कराया बल्कि बौद्ध संघ में श्रद्धा भी व्यक्त करते हुए कह रहे हैं कि, ''मगध नरेश देवनामप्रिय प्रियदर्शी संघ को प्रमाण करता है तथा संघ के सफल संचालन की कामना करता है।'' भाब्रू शिलालेख से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह क्षेत्र महान मौर्य सम्राट अशोक के समय मगध के अधीन था और मौर्यों के शासन का अभिन्न तथा महत्वपूर्ण क्षेत्र था विशेषकर बौद्ध संघ गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध था। यह बौद्ध संघ गतिविधियों जिनका अपने शिलालेख में मौर्य सम्राट अशोक स्वयं उल्लेख करता है इस क्षेत्र की सांस्कृतिक गतिविधियाँ की महानता का सूचक है। इस क्षेत्र के ये बौद्ध संघ और बौद्ध मंदिर के अवशेष इस क्षेत्र में सम्राट अशोक की बौद्ध संघीय गतिविधियों के उच्च स्तरीय प्रभाव को प्रदर्शित करता है। इन सब पुरातात्विक अवशेषों के संकेत इसारा करते हैं कि बौद्ध धर्म इस क्षेत्र में 3 शताब्दी ई.पू. में गहरी पकड़ बना चुका था।

कल्हणकृत राजतरंगिनी के अनुसार अशोक की मृत्यु के पश्चात् मगध में हुए उत्तराधिकार संघर्ष में मगध छिन्न–भिन्न हो गया। इसका फायदा उठाते हुए शुंग और यूनानियों ने इस क्षेत्र में अपनी गतिविधियाँ बढ़ा दी।

बौद्ध दित्यावदान, विद्वान तारानाथ, मेरुतुंग मालविकाग्निमित्र में इस क्षेत्र में विभिन्न शासकों की गतिविधियों का जिक्र आता है। मालविकाग्निमित्र की माने तो सिन्धु तक पुष्यमित्र का शासन था राजस्थान के दौसा जिले के लालसोट से शुंग कालीन वेदिका मिलना उनके यहाँ होने का प्रमाण पुष्ट करती है।

कुषाण शासक कनिष्क के समय उत्तर–पश्चिम अफगानिस्तान गंधार क्षेत्र का सम्मिलित कर भारतीय उपमहाद्वीप में बौद्ध संस्कृति चरम पर पहुँच गई, पाकिस्तान के पेशावर से लेकर बिहार तक उसके प्रभाव क्षेत्र में आ चुके थे इसके प्रमाण सिक्के है अभिलेख है, राजस्थानी बृज–मत्स्य क्षेत्र पर कुषाणों का प्रभाव इन्हीं पुरातात्विक साक्ष्यों से स्पष्ट होता है। दौसा जिले के मांडरिज से कुषाण स्तूप के प्रमाण प्राप्त होते हैं जिससे इस क्षेत्र में उनके प्रभाव का स्पष्ट प्रमाण है।

बृज प्रदेश– मथुरा कुषाणों की गतिविधियों का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया विशेषकर कला के क्षेत्र में मथुरा कला अब गंधार कला से प्रभावित होकर सूर्य, प्रभामंडल को मूर्तियों में दर्शाया जाने लगा, मूर्तियों की सुन्दरता पर गंधार प्रभाव स्पष्ट झलकता है क्योंकि बौद्ध गंधार कला अब मथुरा में हिन्दू–देवताओं पर अपना प्रभाव दिखाने लगी।

रुद्रदामन जो कि एक क्षत्रप शासक था ने कुषाण शासको के अति महत्वपूर्ण स्थल उत्तर–पश्चिम तक विजय प्राप्त करते हुए राजस्थान को भी अपने अधीन किया वाद के क्षत्रप शासक इसे जारी नहीं रख पाये कुषाणों के बुरे दिनों का अन्दाजा इससे लगाया जा सकता है कि कुषाण शासक कनिष्क–II के बाद मथुरा से हटकर पेशावर राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया जो सिर्फ उत्तरी भारतीय उपमहाद्वीप को ही नियंत्रित कर सकता था।

संदर्भ

1. शुक्ला, डी.सी. अर्ली हिस्ट्री ऑफ राजस्थान, पृ. 6
2. अग्रवाल, आर.सी., अरावली द मेजर सौर्स ऑफ कॉपर फोर द इण्डस एण्ड इण्डस रिलेटेड कल्चरर्स, इन फ्रन्टियर ऑफ द इण्डस सिविलाइजेशन, 1984, पृ. 159–162
3. शुक्ला, डी.सी., पूर्वोक्त पृ. 6
4. कनिघम, एलेक्जेण्डर रिपोर्ट, खण्ड–XX, पृ. 22
5. कल्हण कृत राजतरंगणी, प्रथम तरंग, श्लोक–108, पु.सं. 2005
6. शुक्ला, डी.सी. पूर्वोक्त, पृ. 23
7. मजूमदार, आर.सी., क्लासीकल एकाउंट ऑफ इण्डिया, II, पृ. 5
8. अल्तेककर, ए.एस., मजूमदार, आर.सी., न्यू हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन पीपुल– IV, (वाकाटक गुप्त युग), पृ. 28–30